पर्यावरण विमर्श: चिंतन, सृजन एवं सरोकार

श्री. आनंदराव आप्पासाहेब बेडगे,
शोधार्थी, हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर,
भ्रमणंध्वनी: 9763166895,
मेल- anandbedge@gmail.com

सारांश:

विश्व में तेज गति से बढ़ता हुआ औद्योगीकरण, विकास की उपभोग्यता एवं जनसंख्या विस्फोट आदि घटनाओं से पर्यावरण संतुलन बिगड़ रहा है | कई लोग अपने जीवन को और सुखकर बनाने की कोशिश में हमारे प्रकृति में प्रदूषण का स्तर बढ़ा रहे है | गरीब और पिछड़ेपन के कारण लोग अपने जीवनयापन के लिए और रोज की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए अपने आस पास के जंगल और वन को काट रहे है | जिससे वायु प्रदूषण और उससे संबंधित अन्य प्रदूषणों में काफी मात्र में बढ़ोतरी हुई है | प्रकृति और पर्यावरण को बचाना है तो सभी लोगों को अपनी हवस को मर्यादा में ढालकर पर्यावरण विनाश को रोकना चाहिए| इस बात पर ध्यान देने की आज जरूरत है की प्रकृति की रक्षा करने से हम अपना जीवन सुरक्षित रख सकते है | हमें पर्यावरण संतुलन बनाये रखे की आज जरूरत आन पड़ी है इसको नजर अंदाज नहीं करना चाहिए | इस समस्या का सामना करने और उसकी तीव्रता को कम करने के लिए आज विश्व के कई देश और संस्थाएं प्रयासरत है | उनके सहयोग से हम अपनी अकेंद्रित जीवन शैली को केन्द्रित जीवन शैली में ढालकर पर्यावरण रक्षा के प्रति प्रयास करते रहना चाहिए |

बीज शब्द : पर्यावरण, जनसंख्या विस्फोट, औद्योगीकरण, वायु प्रदूषण, प्रकृति, पर्यावरण रक्षा

प्रस्तावना :

'पर्यावरण' आज देश और दुनिया के लिए एक महत्वपूर्ण विषय है | पर्यावरण के संतुलन पर ही आज मानव जाती का अस्तित्व टिका हुआ है | पर्यावरण दो शब्दों से मिलकर बना हुआ है, परि जिसका अर्थ है चारों तरफ तथा आवरण का अर्थ है घेरा इससे हमारे चारों तरफ फैला हुआ वातावरण अभिप्रेत है, जिसमे जल, थल, वायु, पशु-पक्षी, मानव प्राणी, वनस्पति, जीव-जंतु आदि | वर्तमान में हमारे प्रकृति की स्थिति बहुत ही खौफनाक हो रही है, बढ़ते हुए प्रदूषण की स्थिति और प्राकृतिक आपदाओं से पूर्णता निजात पाने की जरूरत आन पड़ी है| विभिन्न प्रकार का बढ़ता प्रदूषण जैसे वायु, जल, मृदा, ध्वनि, प्लास्टिक, अंतरिक्ष आदि आज विश्व के सामने गंभीर समस्या उत्पन्न कर रहा है | इसका बढ़ता हुआ प्रमाण हमारे अस्तित्व को इस धरातल से नष्ट करने में कारगर साबित हो सकता है | आज तेज गति से कम होते वन, विभिन्न प्रकार के वन्य जीवों की घटती हुई संख्या, प्राकृतिक संपदा का अत्यधिक दोहन, जलवायु परिवर्तन, जनसंख्या की अत्यधिक वृद्धि, ओझोन परत का क्षरण, जल में मिलते मानव और औद्योगिकी अवशिष्ट आदि से पारिस्थितिकी असंतुलन बढ़ा है, इसी के कारण Global warming, सूखा, बाढ़, भू स्खलन, भूमि मरुस्थलिकरण आदि समस्याओं से आज सारा विश्व सामना कर रहा है | आज सारे विश्व की मानव जाती के सामने अपने अस्तित्व के ही विभिन्न प्रश्न खड़े हुए है |

वनों की कटाई के साथ-साथ मानव की अनियंत्रित क्रियाकलापों से भी पर्यावरण को नुकसान पहुंच रहा है, जैसे की लोगों द्वारा जंगलों को जानबूझकर आग लगाई जाने से लाखों की संख्या में नए और पुराने पेड़-पौधे उस आग में जल कर खाक हो जाते है | वर्तमान विश्व के सामने खड़ी यह पारिस्थितिकी विनाश की एक और खौफनाक समस्या है | इस तरह वनों के जल जाने से उसमें रहने वाले जानवर, जीव-जंतु, वनस्पतियों का अस्तित्व ही नष्ट हो जाता है | आज पूरी दुनिया को एक होकर इस गंभीर समस्या से लड़ना होगा, यह समय की पुकार है |

शोध विषय का विश्लेषण :

पर्यावरण को अंग्रेजी में Environment के नाम से जाना जाता है, जो फ्रेंच शब्द Environer से बना हुआ है | जिसका अर्थ है हमारे आस-पास का वातावरण परि और आवरण से मिलकर बना है | पर्यावरण जिसमें परि का अर्थ है चारों तरफ तथा आवरण का अर्थ है घेरा जो प्रकृति वायु, जल, मृदा, पेड़-पौधे, प्राणी, जीव-जंतुओं आदि से संबंधित है | स्टॉकहोम संधि 1972 से प्रति वर्ष 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है | पर मानव अपने भौतिक जीवन में इतना व्यस्त हो गया है की वो

पर्यावरण पर ध्यान देने के लिए पर्याप्त समय भी नहीं निकलता है | आज पर्यावरण के बारे में मानव की जो उदासीन सोच है उसे समय रहते बदलना होगा, अन्यथा विनाश दूर नहीं | मानव द्वारा बनाई गयी आर्थिक और सामाजिक नीतियों से पर्यावरण का आये दिन नुकसान हो रहा है | आज पर्यावरण से संबंधित विभिन्न समस्या है जैसे प्रदूषण का बढ़ता स्तर, प्राकृतिक संसाधन का अयोग्य नीति द्वारा अत्यधिक दोहन और उसके लिये वनों की बहुत बढ़ी मात्रा में कटाई, जल में ज्यादा मात्रा में मिले हुए मानवी और रासायनिक, भौतिक अवशिष्ट, प्लास्टिक, अन्तरिक्ष में फैला नाकाम हुआ e-waste, जिससे पृथ्वी के चारों तरफ विषैले गैसों और पदार्थों का फैलाव होता है | उससे वातावरण का ताप बढ़ता है जो प्राकृतिक वर्षा में बाधा उत्पन्न करता है, जिससे पृथ्वी पर सूखे जैसा संकट निर्माण होता है | कहते है की प्रकृति और समाज की आन्तरक्रिया ही पारिस्थितिकी कहलाती है | प्राकृतिक संसाधनों की ओर बढ़ती हुए मानव की उपभोग वृत्ति पर्यावरण का विनाश कर रही है, जिससे हमारी सम्पूर्ण मानव जाती के अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह खड़े कर दिए है | विकास के नाम पर मानव समाज ने प्रकृति को विकृत किया है, क्योंकि वो अपनी भौतिक सुख-सुविधा पाने की हवस से पर्यावरण को आये दिन नुकसान पहुंचा रहा है | जिसके कारण प्रदूषण दिन ब दिन बढ़ता ही जा रहा है, बढ़ते प्रदूषण से कई संक्रामक रोग उत्पन्न हुए है और उसमें वृद्धि होती जा रही है | जो विश्व में एक महामारी की तरह फैल रहे है, यह एक सच है |

किसी मानव जाती समूह के प्रति हम विनाश का रुख अपनाते है तो कुछ समय बाद वह मानव समूह एकजुट होकर उस समस्या और परिस्थिति का सामना करता है, पूरे जोरों से उसका विरोध भी करता है, उनके ऊपर होनेवाले अन्याय को दूर करने का वह प्रयास करता है, इसी बीच यह बात अन्यायी प्रशासन के विरोध में एक क्रांति के रूप में जन्म लेती है | लोगों की जीवनशैली में आये बदलाव के कारण उन्होंने प्रकृति के विनाश का रुख अपनाया है | पर वह दिन भी दूर नहीं जब प्रकृति की सहनशीलता खत्म हो जाएगी तो वह पूरी मानव जाती के सामने विनाश रूपी क्रांति खड़ी करेंगी, जिसका सामना मानव कदापि कर नहीं सकता | प्रकृति में स्थित वनस्पतियाँ, उपयुक्त जीव-जंतु, जंगली प्राणियों से परिस्थितिकी का चक्र अक्षुण रहता है, इस कारण पर्यावरण संतुलन बनाये रहता है, उनकी कोई गलती न होने के कारण भी मानव के दुराचारी स्वभाव और आचरण के कारण वर्तमान में उनका भी विनाश अटल हो गया है| भारतीय संस्कृति में प्रकृति में स्थित जल, वायु, आकाश, सूर्य, चन्द्र और वनस्पति आदि को देवताओं का दर्जा दिया गया है | सूर्य से हमें प्रकाश मिलता है, अग्नि से हमें ताप, बादल से जल, पृथ्वी से हमें खाने के लिए अन्न तथा वनस्पतियों से ऑक्सिजन मिलता है और वह कार्बन-डायऑक्साईड ग्रहण कर लेती है ताकि हमें राहत मिल सके | विश्व के कई प्रमुख देशों के राजनेताओं, पर्यावरणविदो और अंतरराष्ट्रीय संस्थानों ने इस समस्या की गंभीरता को देखते हुए इस समस्या से निजात पाने के लिए कई महत्वपूर्ण प्रयास भी किये है | इससे संबंधित पर्यावरण और बिगड़ते हुए हालत को संभालने के लिए विश्व में आज तक कई सम्मेलनों का आयोजन किया गया है, जो प्रकृति और पर्यावरण की रक्षा के लिए काफी अच्छा कारगर साबित हुए है | उन सम्मेलनों में जैसे- स्टॉकहोम सम्मेलन 1972 यह मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण को स्थायी कार्बनिक प्रदूषक (POPs) से बचने के लिये है | हेलसिंकी सम्मेलन 1974 मुख्य विषय समुद्री पर्यावरण की रक्षा करना शामिल है | लंदन सम्मेलन 1975 समुद्री कचरे का निस्तारण करने से संबंधित है | वियना सम्मेलन 1985 इस सम्मेलन में मानव स्वास्थ्य और ओझोन परत में परिवर्तन करने वाली मानवीय गतिविधियों की रोकथाम करने के लिये प्रभावी उपाय अपनाने पर सदस्य देशों ने प्रतिबद्धता व्यक्त की | मोंट्रियल संधि 1987 ओझोन परत को नुकसान पहुँचाने वाले विभिन्न पदार्थों के उत्पादन तथा उपभोग पर नियंत्रण के उद्देश्य रखा है, इसी संधि में 16 सितंबर विश्व ओझोन दिवस मनाना तय हुआ| टोरंटो सम्मेलन 1988 इस सम्मेलन का मुख्य विषय ग्रीन हाउस गैसों के अंतर्गत आनेवाली गैस कार्बन डाई आक्साइड (CO_2) रखा गया था | रियो सम्मेलन 1992 इसमें पर्यावरण एवं विकास पर संयुक्त राष्ट्र द्वारा आयोजित इस सम्मेलन को ही 'पृथ्वी सम्मेलन' या 'रियो सम्मेलन' के नाम से जाना गया है | इस सम्मेलन का उद्देश्य इक्कीसवीं सदी के पर्यावरण के महत्वपूर्ण नियमों का एक दस्तावेज तैयार करना था जिसे एजेंडा 21 के नाम से जाना गया है | क्योटो संधि 1997 इसमें ग्लोबल वार्मिंग द्वारा हो रहे जलवायु परिवर्तन को रोकने का उद्देश्य अपनाया गया है | इस सम्मेलन में यह तय किया गया की सभी राष्ट्र कार्बन डाई आक्साइड के उत्सर्जन में कटौती करे | सिएटल सम्मेलन 1999 इस सम्मेलन का मुख्य विषय विश्व व्यापार को पर्यावरण के दायरे में लाने का उद्देश्य है | कानकुन सम्मेलन 2010 इस सम्मेलन का उद्देश्य जलवायु परिवर्तन पर एक नवीन संधि के लिए सर्वसम्मति कायम करना, उत्सर्जन की मात्रा टी करना तथा वातावरण वृद्धि को पूर्व औद्योगिक काल के तापमान से २ डिग्री कम तक बनाये रखना | इससे यही प्रतीत होता है की आज सारा विश्व इस विषय पर जागृत होता दिखाई दे रहा है| हम सब को आगे भी पर्यावरण की रक्षा के लिए प्रयासरत रहना है ताकि हम अपनी वसुंधरा को भविष्य में आने वाले विनाश से बचाए क्योंकि यही हमारा मानव धर्म है |

निष्कर्ष :

पर्यावरण की रक्षा से ही हमारी जीवन की सुरक्षा जूड़ी हुई है | दुनिया आज पर्यावरण सुरक्षा को प्राथमिकता दे रही है, फिर भी हम इसकी रक्षा के लिए खुद अपने आप से जागृत और प्रयासरत होने की जरूरत आन पड़ी है | अगर समय रहते हम इस समस्या पर कोई कारगर कदम नहीं उठाएंगे तो यह प्रकृति और साथ ही साथ पूरी मानव जाती इस विनाश के चक्र में फंस जाएगी | 'जियो और जीने दो' इस उक्ति के तहत हमें अपने आपको ढालना होगा | हमें अपनी ज़रूरतों को कम करके जितने की आवश्यकता है उतना ही प्रकृति का इस्तेमाल करना चाहिए | प्राकृतिक संसाधनों का सही ढंग से और मर्यादा में रहकर उपयोग करना चाहिए ताकि प्रकृति पर बोझ ना बड़े | विज्ञापन के ज़रिये हम लोगों में जनजागृति करके प्रकृति और पर्यावरण के प्रति जागृत करना होगा ताकि आनेवाले पृथ्वी विनाश के संकट को रोका जाये | हम सभी को एकजुट होकर प्रदुषण और हो रहे पर्यावरण के असंतुलन पर कोई कारगर तोड़ निकलने का प्रयास करना चाहिए ताकि इस धरातल पर हमारा अस्तित्व टिका रह सके |

संदर्भ ग्रंथ/ टिप्पणी :

1. योगेन्द्र शर्मा, लोकभारती प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2020, पृ. 1
2. वही पृ. 2
3. वही पृ. 3
4. वही पृ. 4
5. भगवतीशरण मिश्र, लक्ष्मण रेखा उपन्यास, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2008
6. ए.बी. सवदी, भूगोल आणि पर्यावरण (मराठी), निराली प्रकाशन, संस्करण 2013, पृ. 10.1
7. वही पृ. 10.2
8. टिप्पणी: सकाल अख़बार, कोल्हापुर, 2 मार्च 2023
9. टिप्पणी: वेब पृष्ट: theexampiller.com (निरीक्षण 4 मार्च 2023)